Philosophy
B.A. Part-I (H)

Explain Pessimism in Indian Philosophy.
भारतीय दर्शन में निराशावादी की व्याख्या करें।

Ans→ निराशावाद (Pessimism) वह दृष्टिकोण है जिसके अनुसार जीवन एवं जगत में निराशा ही निराशा अथवा दुःख-ही-दुःख है। जहाँ केवल निषेधात्मक या अन्धेरे पक्ष को ही देखा जाता है। यहाँ भावात्मक या उज्जवल पक्ष की अवहेलना की जाती है। निराशावाद का विरोधी आशावाद है जिसके अनुसार जीवन में सुख ही सुख है।

यहाँ प्रश्न उठता है, क्या भारतीय दर्शन निराशावादी है? यह सत्य है कि भारतीय दर्शन का आरम्भ दुःखों के वर्णन से होता है। प्रायः सभी भारतीय विचारक दुःखों की व्यापकता देखकर इन्हें दूर करने के लिए चिन्तन प्रारम्भ करते हैं। इसलिए भारतीय दर्शन को निराशावादी कहा जाता है, परन्तु भारतीय दर्शन को निराशावादी कहना निम्नांकित तथ्यों से असत्य सिद्ध होता है।-

① यह सत्य है कि भारतीय दर्शन का आरम्भ दुःख के चित्रण अथवा निराशावाद से होता है, परन्तु इसका अन्त निराशावाद में न होकर आशावाद में होता है। सभी भारतीय सम्प्रदायों ने दुःखों की उपस्थिति के चित्रण के साथ-साथ इनसे बचने के विविध मार्गों का उल्लेख भी किया है। दुःखों से मुक्ति की कई विधियाँ बताई गयी हैं। व्यक्ति इन विधियों या मार्गों का अनुसरण करके मोक्ष या निर्वाण प्राप्त कर सकता है। मोक्ष दुःखरहित अवस्था का नाम है। इस प्रकार मोक्ष को सर्वोच्च लक्ष्य मानने के कारण भारतीय दर्शन को निराशावादी नहीं कहा जा सकता है।

② कुछ लोग निराशावादी का अर्थ पलायनवाद मानते हैं। इसके अनुसार भारतीय विचारक जीवन

एवं जगत की कठिनाइयों से भागकर सन्यास एवं आत्मसंयम का उपदेश देते हैं। यह आक्षेप भी निराधार है। भारतीय दर्शन कभी भी जीवन एवं जगत की कठिनाइयों से भागने की सलाह नहीं देता है। यह हमें इनका डटकर मुकाबला करने की सलाह देता है। मोक्ष प्राप्त व्यक्ति भी कर्म से सन्यास नहीं लेता। वह लोक कल्याण हेतु निरन्तर सक्रिय होता है। भगवान बुद्ध अस्सी वर्ष की उम्र तक लोकहित के लिए अपने उपदेशों का प्रचार प्रसार करते रहे. अतः भारतीय दर्शन को पलायनवादी नहीं कहा जा सकता।

(iii) कभी-कभी भारतीय दर्शन को निराशावादी इसलिए कहा जाता है कि यह अति आध्यात्मिक है। यह शरीर की अपेक्षा आत्मा की महत्ता अधिक स्वीकार करता है। भौतिक जगत की अपेक्षा परलोक, स्वर्ग, मोक्ष आदि पर अधिक जोर देता है इस प्रकार इसे अति आध्यात्मिक कहा जाता है तथा परिणामस्वरूप इसे निराशावादी माना जाता है। परन्तु यह आक्षेप भी गलत है भारतीय दर्शन आध्यात्मवादी तो अवश्य है, परन्तु इसे अति आध्यात्मिक मानना अनुचित है।

(iv) भारतीय दर्शन का आरम्भ निराशावाद से होता है परन्तु उसका अन्त आशावाद में होता है। इस दर्शन का आरम्भ दुःखों के विशद विवरण से होता है परन्तु इसका अन्त मोक्ष की अवधारणा में होता है। निराशावाद भारतीय दर्शन में एक साधन के रूप में अपनाया गया है इसका अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। मोक्ष दुःखरहित अवस्था के साथ-साथ आनन्द की अवस्था भी है, अतः भारतीय दर्शन में निराशावाद साध्य (End) के रूप में कदापि ग्रहण नहीं किया गया है।

(v) साहित्य एवं दर्शन में अविभाज्य सम्बन्ध है भारत में संस्कृत नाटकों का आरम्भ दुःखों के विवरण से होता है, परन्तु इनका अन्त सुख एवं आनन्द की प्राप्ति में होती है ये सुखान्त नाटक हैं, अतः भारतीय दर्श को निराशावादी नहीं कहा जा सकता।

(vi) निराशावादी स्वतः निरर्थक नहीं कहा जा सकता। बि इसके आशावाद का उदय नहीं हो सकता। निराशावाद आशावाद का पूरक है निराशावाद आशावाद तक पहुँचने का एक महत्वपूर्ण सोपान है।

अतः भारतीय दर्शन निराशावादी नहीं कहा जा सकता।